**ओ३म्**

**-आर्यसमाज, डोभरी में 400 से अधिक छात्र-छात्राओं में आर्यसमाज के प्रचार का विशेष कार्यक्रम-**

**हम वैदिक भारतीय संस्कृति को जीवित रखेः आचार्य धनंजय**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 देहरादून नगर में आर्यसमाज डोभरी पर्वतीय अंचल के एक ग्राम में बसा हुआ महत्वपूर्ण आर्यसमाज है जहां के सभी सदस्य व अधिकारी आर्यसमाज के प्रति समर्पित एवं वेद प्रचार के कार्यों में रूचि लेने वाले हैं। आज यहां 8 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं का विशेष कार्यक्रम हुआ। इसकी भूमिका यह है कि देहरादून में श्री रूपेन्द्र आर्य आर्यवीर दल के व्यायाम आचार्य आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून में पधारे। गुरुकुल के आचार्य धनंजय जी ने उनकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए आर्यसमाज डोभरी के प्रधान श्री नागेन्द्र तोमल एवं मंत्री श्री दयानन्द तिवारी जी से बातचीत कर श्री रूपेन्द्र आर्य जी की सेवाओं का उपयोग करने का प्रस्ताव किया। इस समाज के अधिकारी आचार्य धनंजय जी का बहुत सम्मान करते हैं। हमें श्री दयानन्द तिवारी जी व उनके कुछ साथी गुरुकुल में कई बार मिले और उनमें सज्जनता व विनम्रता इतनी अधिक है कि उसका शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते। श्री दयानन्द तिवारी जी ने हमें अनेक अवसरों पर आर्यसमाज डोभरी आने के लिए आमंत्रित किया था। उनके उस प्रेममय व्यवहार और आचार्य धनंजय जी की प्रेरणा से हम आज आर्यसमाज डोभरी के उत्सव में पहुंच गये। आचार्य धंनजय जी के प्रस्ताव पर डोभरी समाज के अधिकारियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और उसे स्वीकार कर लिया। श्रही दयानन्द तिवारी आदि समाज के अधिकारियों ने फिर निकटवर्ती राजकीय एवं निजी विद्यालयों से सम्पर्क किया। 8 विद्यालय आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर के लिए तैयार हुए। श्री रूपेन्द्र आर्य ने उन्हें चार चार दिनों का समय दिया और आर्यवीर दल विषयक अधिकांश शिक्षाओं व व्यायामों का उन्हें प्रशिक्षण दिया। आज आठ विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के प्रशिक्षण को देखकर सभी ने एक मत से स्वीकार किया कि वह सभी बच्चे उनके प्रशिक्षण से पूर्ण दक्ष हो गये हैं। लाभान्वित बच्चों की संख्या 400 से अधिक है जिसमें से लगभग 400 आज आर्यसमाज डोभरी के इस निमित्त समापन आयोजन समारोह में सम्मिलित हुए। आचार्य धनंजय जी की प्रेरणा से हम भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए और हमें अनुभव हुआ कि आज के दिन का हमारा समय का सदुपयोग हुआ है।

 आज का कार्यक्रम आर्यसमाज डोभरी के भव्य भवन के सभागार में प्रातः 8.00 बजे से आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून के यशस्वी आचार्य डा. धनंजय जी के पौरोहित्य में देवयज्ञ से हुआ। आर्यसमाज में सभागार, यज्ञशाला, आर्य साहित्य का समृद्ध पुस्तकालय, अतिथियों के लिए निवास के लिए कमरे तथा अनेक स्वच्छ शौचालय हैं। आज के यज्ञ के मुख्य यजमान निवासी विकासनगर दानी प्रवृत्ति के श्री अमिताभ अनिरुद्ध जी थे। यज्ञ में आर्यसमाज के अधिकारियों व सदस्यों सहित 8 विद्यालयों के अध्यापकों व शिक्षिकाओं सहित बच्चों ने भी भाग लिया। यज्ञ के अनन्तर आचार्य धनंजय जी ने बताया कि डोभरी के निकटवर्ती आठ विद्यालयों का चयन कर वहां आर्यवीर दल का शिविर वा शाखायें लगायी गयी थीं। आर्यसमाज में भी शाखायें लगीं। आयोजन में उपस्थित सभी विद्यालयों के पांच-पांच छात्र-छात्राओं ने यज्ञ में आहुतियां दी। सभी विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं ने भी यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियां दीं। यज्ञ के पूर्ण हो जाने पर सामूहिक यज्ञ प्रार्थना भी की गई। 400 बच्चों की इस आयोजन में उपस्थिति से इसकी भव्यता व महत्ता में चार चांद लग गये। हमने ऐसा आयोजन पहले नहीं देखा जहां आर्यसमाज से अपरिचित विद्यालयों में आर्यवीर दल की शाखा लगी हो और उन बच्चों व शिक्षकों ने आर्यसमाज में उपस्थित होकर इस प्रकार का आयोजन कर उसमें भाग लिया हो। बच्चों से पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि वह सभी व्यायाम व प्राप्त प्रशिक्षण के अनुसार अपनी दिनचर्या जारी रखेंगे। व्यायाम आचार्य श्री हेमन्त आर्य को सम्मानित किये जाने पर भी सभी बच्चों ने तीव्र स्वर से अपनी प्रसन्नता को प्रकट की और कर तल ध्वनि की। यज्ञ व यज्ञ प्रार्थना के बाद यजमान श्री अमिताभ अनिरुद्ध जी का सम्बोधन भी हुआ। उन्होंने यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कृत्य बताया। उन्होंने इस आयोजन में सम्मिलित होने पर अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित की। आर्यवीर दल के अन्तर्गत किये गये कार्य के लिए उन्होनें बधाई दी। आर्यवीर दल का प्रशिक्षण क्षेत्र विद्यालयों में करने की उन्होंने सराहना की। उन्होंने कहा कि कमी ज्ञान की नहीं साधना की है। उन्होंने कहा कि साधना से लोग ऊंचाईयों तक पहुंचे हैं। बच्चों को उन्होंने प्रेरणा की कि हम जीवन में शुभ गुणों को धारण कर सर्वोच्च स्थान पर पहुंच सकते हैं। उनके सम्बोधन के बाद उनका सम्मान किया गया और प्रसाद वितरण सहित सभी को जलपान कराया गया।

 जलपान के बाद गुरुकुल पौंधा के ब्रह्चारियों ने मिलकर एक भजन गया जिसके बोल थे ‘हिम्मत न हारिये प्रभु न बिसारिये। हंसते मुसकराते हुए जिन्दगी गुजारिये।।’ इसके बाद विद्यालय के बच्चों का व्यायाम आदि का प्रदर्शन आरम्भ हुआ। आरम्भ सूर्य नमस्कार से हुआ, उसके बाद भूमि नमस्कार तथा कराटे का प्रदर्शन अनेक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने मिलकर किया। सभी बच्चों ने वीर ताली बजाकर भी दिखाई। अनेक बच्चों ने मिलकर सर्वांग सुन्दर व्यायामों का प्रदर्शन किया। सभी व्यायाम संगीत की धुन पर किये गये। यह सभी व्यायाम बच्चों की शारीरिक उन्नति में सहयोगी थे। इन व्यायामों की महत्ता व उपयोगिता पर आचार्य धनंजय जी माइक से निरन्तर प्रकाश डालते रहे। तलवार चलाने का भी अनेक बच्चों ने प्रदर्शन किया। इस मध्य अपनी टिप्पणी में आचार्य धनंजय ने कहा कि हमारा प्रयास है कि हम भारतीय संस्कृति को जीवित रखे। इसके बाद विद्यार्थियों ने डम्बल व्यायाम का प्रदर्शन किया। आचार्य धनंजय जी ने इस बीच कहा कि हमारी संस्कृति हमें स्वस्थ रखती है। उनकी टिप्पणी व डम्बल व्यायाम के बाद कराटे और उसके बाद लेजियम व्यायाम का प्रदर्शन हुआ। अन्य अनेक प्रकार के आसन व असम्भव सी मुद्रायें भी बच्चों ने प्रस्तुत की। **‘गलत मत कदम उठाओं सोच कर चलो। राह की मुसीबतों को पार कर चलो’** यह भजन व्यायाम प्रदर्शन के बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने समवेत स्वरों में सुनाया।

 आज की वृहद सभा व सत्संग में मुख्य प्रवचन आचार्य धनंजय जी का हुआ। उन्होंने आठ विद्यालयों द्वारा चलाये गये आर्यवीर दल के सफल प्रशिक्षण शिविरों का उल्लेख कर बताया कि ऐसे प्रयास पहले भी किये गये थे परन्तु वह आगे नहीं बढ़ पाये थे। इस बार हमने नई चेतना के साथ इस कार्य को आरम्भ किया। आचार्य धंनंजय जी ने छत्तीसगढ़ में जन्में व्यायामाचार्य श्री रूपेन्द्र आर्य की साधना व कार्यों की प्रशंसा की। आचार्य जी ने कहा कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का उद्देश्य है। शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति इसके अन्तर्गत आती हैं। महर्षि दयानन्द का उल्लेख कर उनके जन्म के समय देश की परिस्थितियों व ऋषि द्वारा किये गये कार्यों पर आचार्य जी ने प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के सन् 1825 में जन्म के समय हम गुलाम थे। अंग्रेज हम पर उन दिनों राज्य कर रहे थे। आचार्य जी ने पूजा की चर्चा की और कहा कि मत-मतान्तरों के लोगों द्वारा धर्म और वेद के नाम पर पापाचार फैलाया गया है। छुआछूत की चर्चा कर आचार्य जी ने उसके दुष्परिणामों से अवगत कराया। इस छुआछूत के कारण ही हमारे बहुत से भाई मुसलमान और ईसाई बन गये। आचार्य जी ने हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं के व्यवहार पर आश्चर्य जताया। उन्होंने कहा कि आर्य जाति की अतीत में इतनी बड़ी हानि होने पर उन्होंने अपने मूर्खतापूर्ण विचारों व सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन व संशोधन नहीं किया। ऐसे विपरीत समय में ऋषि दयानन्द जी का आगमन हुआ। आचार्य धनंजय जी ने विदेशी मतों व उनकी धर्म पुस्तकों की चर्चा कर उनमें विद्यमान गपोड़ों का उल्लेख किया। उन्होंने मत-मतान्तरों की पूजा पद्धतियों के अधूरेपन की भी चर्चा की। ऋषि दयानन्द के समय में विभिन्न समुदायों मुख्यतः स्त्री व शूद्रों की शिक्षा की दयनीय स्थिति का भी आपने उल्लेख किया। ‘स्त्री पैरों की जूती है’ कहावत का उल्लेख कर उस पर भी दुःख जताया। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी से मथुरा में विद्याध्ययन कर आर्यसमाज की स्थापना की। आचार्य जी का यह पूरा वक्तव्य हम पृथक से प्रस्तुत करेंगे अन्यथा यह लेख बहुत विस्तृत हो जायेगा।

 आचार्य जी के प्रभावशाली सम्बोधन के बाद श्री कवि लाल शर्मा जी का एक भजन हुआ जिसके बोल थे **‘सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है, राजी है हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।।’** इसके बाद धर्म वा सत्संग सभा में लाल बहादुर प्रशासनिक एकेडमी में हिन्दी के सेवानिवृत प्रोफेसर डा. सुमन सिंह जी का सम्बोधन हुआ। उन्होंने अपना परिचय दिया जिसमें वह बातें भी सम्मिलित थी जिसमें उनके बचपन की निर्धनता व बेबसी की घटनायें विद्यमान थीं। उन्होंने बताया कि वह सन् 1958 से 1960 के बीच पर्वतों की रानी मसूरी में पढ़ते थे और अपने गांव से मसूरी पैदल जाया करते थे। इसी बीच उन्होंने वहां से हाईस्कूल की परीक्षा पास की थी। उन्होंने बताया कि उनके परिवार के किसी सदस्य के पास मैट्रिक के फार्म की फीस साढ़े नौ रूपये भरने के लिए पैसे नहीं थे। बड़ी मुश्किल से वह उसका प्रबन्ध कर सके थे। उन्होंने बच्चों को कहा कि महापुरुषों के चित्र देखकर प्रेरणा मिलती है। उन्होंने आगे कहा कि ओ३म् लिखे कागज को देखकर प्रेरणा व शक्ति मिलती है। विद्वान वक्ता ने आर्यसमाज डोभरी मे ंआयोजित इस कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र पर प्रकाशित उद्देश्य पढ़कर भी सुनाया। उन्होंने कहा कि बच्चों की योग व आसन व्यायामों में रूचि को बढ़ाने के लिए यह कार्यक्रम किया गया है। उन्होंने आर्यवीर दल वा योग प्रशिक्षक के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण से बच्चों के जीवन में व्यवहारिक परिवर्तन होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि समाज के मंच पर इतने अधिक वरिष्ठ नागरिकों का बैठना एक उपलब्धि है। 75 वर्षीय विद्वान डा. सुमन सिंह ने कहा कि इस कार्यक्रम का लाभ लिया जाना चाहिये। यहां सीखी बातों को बच्चों को अपने व्यवहार में लाना चाहिये। उन्होंने कहा कि न्याय केवल किया ही नहीं जाना चाहिये अपितु यह दिखना भी चाहिये। उन्होंने इससे जुड़ी अंग्रेजी कहावत सुनाई। उन्होंने दोहराया कि आपने जो प्रशिक्षण लिया है वह आपके जीवन में उतरना चाहिये। उन्होंने एक आर्य विद्वान से मसूरी आर्यसमाज, लण्डौर बाजार में प्रशिक्षण प्राप्त किया था जिसका उन्होंने अनेक वर्षों तक अभ्यास किया। इसके प्रभाव से 75 वर्ष की आयु में अब भी 10 किमी. निरन्तर पैदल चल सकते हैं। बच्चों को उन्होंने कहा कि आपमें जिज्ञासा व अन्वेषण की प्रवृत्ति होनी चाहिये। उन्होंने अपनी कमियों को ढूढने व उन्हें अपनी डायरी में लिखने को कहा और बताया कि इससे उन्हें लाभ होगा।

इसके बाद मनमोहन आर्य का सम्बोधन हुआ। उन्होंने **‘सत्य वद धर्म चर’** पर प्रकाश डाला और उससे होने वाले लाभों को बताया। उन्होंने बुरे विचारों को अपने मन में न आने देने और निराशा से बचने व इसके आने पर उसे दृणता से दूर करने को कहा। इससे सम्बन्धित एक वेदमंत्र का भाव भी उन्होंने बताया। मनमोहन आर्य ने कर्मफल सिद्धान्त से जुड़ी एक घटना की चर्चा की और बच्चों को अपने जीवन में किसी असहाय व पशु-पक्षी आदि को अकारण दुःख न पहुंचाने की सलाह दी। इसके बाद आर्यसमाज के प्रधान एवं मंत्री जी द्वारा उनके कार्यों का उल्लेख कर प्रशंसा की गई और शाल ओढ़ाकर उनको सम्मानित किया गया। मारीशस से गुरुकुल पधारे और आयोजन में उपस्थित आर्यसमाज के पुरोहित जी का भी शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। आर्यवीर दल के व्यायाम आचार्य श्री रूपेन्द्र आर्य जी का भी शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया और उनकी अनेकविध प्रशंसा की गई। स्कूल अध्यापक व शिक्षकों आदि को भी सम्मनित किया गया। अन्त में बच्चों को पुस्तक आदि देकर पुरस्कृत किया गया। शान्ति पाठ और समूह भोजन के बाद आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

 इस आयोजन को सफल बनाने में गुरुकुल पौंधा के प्राचार्य डा. धनंजय सहित आर्यसमाज डोभरी के श्री नागेन्द्र तोमर, प्रधान व मंत्री श्री दयानन्द तिवारी सहित समाज के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों की विशेष भूमिका रही।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**